खुतबात ए फकीर /४

1. अच्छे खातमे के दस असबाब
2. तौहीद की हकीकत
3. ईमान की मीठास का मझा
4. हमे ईमान की मीठास मिल रही है या नही?
5. सदका करने से अच्छा खातमा केसे?
6. शक्र गुजारी का इनाम
7. अल्लाह के खौफ से गुनाह को छोडने से हुसने खातमा
8. नेक बन्दो की सांगत और हुसने खातमा

उर्दु जिल्द २७ से इन मज़मुनो का लिप्यांतरण किया गया है.

पीर ज़ुल्फीकार नक्शबंदी दा.ब.

बिस्मिल्लाहीर रहमान्नीर रहीम

1. अच्छे खातमे के दस असबाब

जो शखस अल्लाह से मुलाकात की तमन्ना दिल मे रखता हो उसे चाहिये के वो नेक अमल करे और अल्लाह की इबादत मे किसी को शरीक ना करे. (सुरे कहफ/११२)

एक अहम दुआ, या अल्लाह हमे ऐसी ज़िन्दगी गुजारने की तौफीक नसीब फरमाये के आखरी वकत मे कलीमा नसीब हो जाये.

बुजरूगो ने लिखा है के जो दुनिया मे जितनी मजबुती के साथ शरीअत पर चलेगा उतना ही कयामत के दिन पुल सिरात पर आसानी के साथ चल सकेगा, और जो दुनिया मे शरीअत के हुकमो पर चलने मे फिसलता

होगा, तो वो पुल सिरात पर भी फिसलेगा.

बुजरूगो ने दस ऐसी बाते बताये है जिन्को करने से इन्सान को आखरी वकत मे इंशाअल्लाह कलीमा नसीब होता है.

1. निगाह की हिफाज़त- इन्सान दिल की शहवत के साथ जब किसी पर मोहब्बत की नजर डालता है, तो इस्के बदले मे अल्लाह की मोहब्बत से मेहरूम कर दिया जाता.

2. मिसवाक की पाबंदी- हदीस मेहे जो मिसवाक की पाबंदी करता है, मलकुल मौत उस बन्दे के पास से शैतान को दुर कर देते है, और बन्दे को कलीमा याद दिला देते है.

3. शक्र अदा करना- इन्सान अल्लाह का शक्र अदा करे.

4. सदका- सदका अल्लाह की नाराजगी को खतम करदेता है, और बुरी मौत से बन्दे को बचा लेता है, (तिरमिजी/६००)

5. अल्लाह वालो की संगत- अल्लाह वालो की संगत इख्तीयार करे, ए ईमान वालो, अल्लाह से डरो, और सच्चो के साथ हो जावो. (सुरे तौबा/११९)

6. अल्लाह से मोहब्बत का इजहार करना- जो शखस दुनिया मे जिस हाल मे ज़िन्दगी गुज़ारेगा उसे उस हाल मे मौत आयेगी.

7. अल्लाह के खौफ से गुनाह को छोड देना.

8. अज़ान का जवाब- जो अज़ान सुने और अज़ान के बाद की दुआ मांगे तो कयामत के दिन हुज़ूर ﷺ उसकी सिफारिश करेगे. बुखारी/४४२

9. क्लीमा ए तय्येबा को ज़्यादा पढना.

10. दुआ करना- “अल्लाहुम्म बारीक लना फिलमौत वफीमा बअदल मौत”, ए अल्लाह हिदायत देने के बाद हमारे दिलो को टेडा ना फरमा देना, और हमे अपनी तरफ से रहमत अता फरमा दीज्ये”. सुबह शाम ये दुआ मांगना सुन्नत अमल भी है (मुसनद अबिल जअद/१७९६)

अल्लाह हम सब को इस्लाम पर ज़िन्दगी गुजारने की तौफीक अता फरमाये और आखरी वकत मे ईमान की हालत मे मौत अता फरमाये आमीन.

2. तौहीद की हकीकत

हसन बसरी(रह) फरमाते थे के तौहीद एक धोबन ने सिखायी, किसी ने पुछा वो केसे? कहा मेरे पडोस मे एक धोबी रेहता था, उन मियां बीवी मे कूछ तू-तू-मे-मे हो रही थी, धोबन अपने शोहर से केह रही थी, मेने तुम्हारी वजह से भुख प्यास, तन्गी और सब कूछ बरदाश्त किया, लेकिन तुमने मेरे सिवा किसी गैर की तरफ नजर भी उठाई ये मे बरदाश्त नही कर सकती,

हजरत ने कहा मुझे कुरान की उस आयत जिस्मे अल्लाह फरमाते है 'मेरे बन्दे जो भी गुनाह लेकर आयेगे मे सब माफ कर दुंगा, लेकिन मेरी मोहब्बत मे किसी को शरीक करोगे ये गुनाह मे माफ नही करूंगा', इससे मुझे तौहीद की हकीकत समझ मे आयी.

रसुलुल्लाहﷺ ने फरमाया जिसका मतलब है 'नजर शैतान के तीरो मे से एक ज़ेहरीला तीर है, जिसने इस्को मेरे खौफ की वजह से छोड दिया, इस नजर को रोकने के बदले मे ऐसा ईमान दुंगा के, वो अपने दिल मे उस ईमान की मीठास को मेहसूस करेंगा.

3. ईमान की मीठास का मझा

निगाह की हिफाज़त के नतीजे मे ईमान की मीठास जो मेहसूस करेगा, इस्की तश्रीह मे मुल्ला अली करी(रह) फरमाते है 'इससे ये बात साबित हुवी के जब दिल मे ईमान की मीठास दाखिल होती है तो वो दिल से कभी बाहर नही निकलती' अल्लाह फरमाते है के मे ईमान की मीठास पेदा कर दुंगा तो इस्का मतलब ये हुवा के अब इस बन्दे की मौत तक ईमान मेहफुज रहेगा.

इस वजह से उस्मे एक मिठास और लज़्ज़त होती है, शहवतो और खवाहिशो के मज़े थोडे, और ईमान की मीठास का मझा सब से उंचा होता है, जब जिस्म के अंग

से जो मज़े मिलते है, वो अगर ऐसे है तो दील जो तमाम अंग का सरदार है, उस्से जो मज़े मिलते है वो केसे होंगे? ईमान की मीठास का मझा दिल से है.

4. हमे ईमान की मीठास मिल रही है या नही?

इस्की पांच निशानिया ये है.

पहली निशानी इबादतों और नेक कामो मे दिल का लगना.

दूसरी निशानी दुनिया की ख्वाहीशात और गुनाहो को छोडना आसान हो जाता है.

तीसरी निशानी अल्लाह की रज़ामंदी के लिये इबादतों की मशक्कत आसान हो जाती है.

चौथी निशानी अल्लाह की तरफ अगर मुश्कील हालात आभी जाये तो वो इस्को अल्लाह की नेमत समझता है.

पाचवी निशानी बन्दा अल्लाह के अच्छे और बुरे फेसलो पर राज़ी रहे जिसे तकदीर कहते है.

तो आज ही इस बात का इरादा करले के ए अल्लाह मेने सब लात और मनात छोड दिये, (बुतो के नाम है) इस लिये आज ही दिल मे इस बात का इरादा करले के ए अल्लाह राज़ी राज़ी करने के लिये मेने सब को छोड दिया, बुतो को तोड, खयालात के हो, या पथ्थर के.

आज इस बात का पक्का इरादा करले के आज के बाद किसी गैर महरम पर नजर नही डालनी है, अब अगर नफस बहाना करे के तुम बच ही नही सकते, तो हमारा अल्लाह तो हमे बचा सकता है, अल्लाह पर नजर कयुं नही डाले? वो परवरदिगार रहमत फरमायेगा, और ये मुशकिल हमारे लिये आसन करदेगा.

अल्लाह हम सब को भी ईमान की मीठास अता फरमाये और हर हाल मे अल्लाह के फेसलो पर राज़ी रेहने की तौफीक अता फरमाये आमीन.

5. सदका करने से अच्छा खातमा केसे?

अल्लाह के रस्ते मे खर्च करना, हजरत आयशा रदी फरमाती है के जब रमज़ान आता था तो मे रसुलुल्लाहﷺ मे तीन बडे बदलाव देखती थी, उस्मे से एक ये है के आपﷺ अपने दोनो हाथो से अपने माल को अल्लाह के रास्ते खर्च कर देते थे.

हमारे बडे अपने बच्चो को जुमा का दिन अपने हाथो से फकीरो को सदका दिलवाते थे, और अल्लाह के रास्ते मे सदका देने की बाकायदा तरबियत दिया करते थे, इससे फरक नही पडता के आप एक लाख दे या एक रूपया दे, अल्लाह चीझ को नही देखते बन्दे की नियत को देखते है.

6. शक्र गुजारी का इनाम

अगर तुम मेरी नेमतो का शक्र अदा करोगे तो मे अपनी नेमते और ज़्यादा अता करूंगा. सुरे इब्राहीम/७

एक बुजरूग पर अल्लाह की बडी नेमते थी, वो डरते थे के कही मुझे मेरे अमल का बदला दुनिया मे ही मिल जाये, और आखिरत मे केह दिया जाये तुम अपनी दुनिया की ज़िन्दगी मे लज़्ज़ते हासिल कर चुके. सुरे अहकाफ/२०

एक दिन उन्के दिल मे ख्याल आया, केहने लगे, या अल्लाह मे बार बार आप को फरयाद करता हुं के मुझे और नेमते नही चाहिये, आप नेमते दिये जा रहे है, अल्लाह ने उन्के दिल मे ये बात डाली, मेरे प्यारे मेरा कानून है जो बन्दा नेमतो का शक्र अदा करता है मे नेमते बढाता हुं, तु जब तक नेमत का शक्र अदा करना बन्द नही करेगा मे नेमते अता करना बन्द नही कर सकता.

शक्र अदा करने का एक बेहतरीन तरीका हुजूर صلى الله عليه وسلم ने दुआ सिखायी की ये दुआ सुबह शाम मांगो, "मे अल्लाह से राज़ी हुं के वो मेरा रब है, और मे मुहम्मद صلى الله عليه وسلم से राज़ी हुं के वो मेरे नबी है, और मे इस्लाम से राज़ी हुं के वो मेरा दीन है". (अबु दवुद/२०७१)

7. अल्लाह के खौफ से गुनाह को छोडने से हुसने खातमा

हदीस मे आता है, अगर कोई नोजवान मर्द को कोई खुबसुरत औरत गुनाह की तरफ बुलाये, और केह दे के 'मे अल्लाह से डरता हुं' तो अल्लाह उसको कयामत के दिन अर्श का साया नसीब फरमा देंगे, इसी तरह अगर कोई नोजवान औरत को कोई मर्द गुनाह की तरफ बुलाये और वो केह दे "के मे अल्लाह से डरती हुं" तो अल्लाह उसको भी कयामत के दिन अर्श का साया नसीब फरमा देंगे. अल्लाह के दर से गुनाह छोड देना ये एक बहोत बडा अमल है.

कुरान मे अल्लाह फरमाते है, "जो अपने रब के सामने कयामत के दिन खडे होने से डर गया और अपने नफस को ख्वाहिशात मे पडने से रोक लिया तो ऐसे सख्स का ठीकाना जन्नत है". सुरे नाज़िआत/४०

जब आदमी गुनाह को अल्लाह के खौफ की वजह से छोड देता है तो फिर अल्लाह उस्के लिये खातिमा बीलखैर होना आसान फरमा देते है. अल्लाह हम सब को आफीय्त के साथ खौफे खुदा नसीब फरमाये और हुसने खातीमा नसीब फरमाये आमीन.

8. नेक बन्दो की सांगत और हुसने खातमा

अल्लाह इरशाद फरमाते है: ए ईमान वालो अल्लाह से दरो, और सच्चो के साथ हो जावो. सुरे तौबा/119

हजरत मुफ्ती शफी रह फरमाते है मेने मोलाना रूम(रह) का एक “शेर” पढा जिसका तरजुमा ये है “अल्लाह वालो के साथ एक घडी का रेहना १०० साल की बगैर दीखलावे की इबादत से बेहतर है” तो मेरे जेहेन मे ख्याल आया की कही मोलाना रूम(रह) से कही कमी ज़्यादती तो ना हुवी, तो मे हजरत थानवी(रह) के पास गया और सवाल क्या ऐसा मालुम होता है के मोलाना रूम(रह) ने कूछ कमी ज़्यादती से काम तो नही लिया, तो हजरत थानवी(रह) ने शेर पढा जिसका तरजुमा ये है के, “एक लाख साल की बगैर दीखलावे की इबादत से बेहतर है” केहने लगे हजरत १०० साल समझ मे नही आ रहा था, आप ने तो लाख पढ दिया, हजरत थानवी(रह) ने समझाया के, अगर बन्दा एक साल बगैर दीखलावे की इबादत करे तो भी उसको अपने अच्छे खातमे का यकीन नही हो सकता, शैतान की मिसाल सामने है, लाखो साल उसने इबादत की, अंजाम बुरा हुवा, कुरान मे है बलआम बाउरा ने ३०० साल इबादत की इस्के बावजूद अंजाम बुरा हुवा.

इससे मालूम हुवा के, एक लाख साल इबादत करने के

बाद भी कोई गेरेंटी नही दे सकता, लेकिन अल्लाह वालो की सांगत मे बेठने से अल्लाह के रसुलﷺ ने गेरेंटी दे दी है, हजरत वो केसे? फरमाया हदीस मे रसुलुल्लाहﷺ ने फरमाया: के अल्लाह वालो के पास अगर तुम बेठोगे तो: “ये वो बन्दे है के इनके पास बेठने वाला बदबख्त नही होता”. इब्ने हिब्बान ३/१३९

आपﷺ की ज़बान से खुशखबरी मिल रही है के एक लम्हे मे वो नेमत मिल सकती है के, अल्लाह अंजाम अच्छा फरमादे.

अल्लाह अपने फज़लो करम से हमे अल्लाह के नेक बन्दो की सांगत से फायदा उठाने की तौफीक नसीब फरमाये, और हुसने खातमा नसीब फरमाये, आमीन.